RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary 2021; 6(4):136-140
ISSN: 2455-3085 (Online)
https://doi.org/10.31305/rrijm.2021.v06.i04.022
Research Paper
Double Blind Peer Reviewed/Refereed Journal
https://www.rrjournals.com/

हिन्द प्रशांत क्षेत्र का बदलता हुआ रणनीतिक एवं सामरिक परिदृश्यः भारत एवं चीन के विशेष संदर्भ में

*Dr. Laxmi Narayan

Assistant Professor (Political Science), Govt. College, Malsisar, Jhunjhunu, Rajasthan

ABSTRACT

समकालीन अंतरराष्ट्रीय संबंधों में क्षेत्रवाद महत्वपूर्ण पहलू बनकर उभरा है। पूरी दुनिया में देश विकास और शांति के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए क्षेत्रीय समूह गठित करने पर जोर दे रहे हैं। एक तरफ जहां चीन ने 21वीं शताब्दी की मेरीटाइम सिल्क रोड (एमएसआर) और वन बेल्ट वन रोड (ओबीओआर) जैसी महत्वकांक्षी परियोजना के माध्यम से व्यापक कनेक्टिविटी की तरफ बढ़ते हुए दूर दराज के क्षेत्रों से आर्थिक गठजोड़ का विस्तार कर रहा है, वहीं भारत भी हिंद महासागर क्षेत्र और उससे भी आगे बढ़कर मौसम और स्पाइस रूट जैसे क्षेत्रीय सहयोग की पहल में सक्रिय है। दोनों ही देश नवाचार नीति पहल और घोषणाओं के माध्यम से क्षेत्रीय सहयोग के अपने एजेंडे को प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं। ऐसी धारणा बनती जा रही है। कि जल्द ही दोनों के बीच टकराव हो सकता है।

Keywords: *हिंद महासागर, विदेश नीति, ब्लू इकोनामी, सामुद्रिक, मेरीटाइम सिल्क रोड़।*

Article Publication

Published Online: 15-Apr-2021

***Author's Correspondence**

Dr. Laxmi Narayan

Assistant Professor (Political Science), Govt. College, Malsisar, Jhunjhunu, Rajasthan

✉ lnbeniwal76@gmail.com

© 2021The Authors. Published by *Research Review Journals*

This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

शोध विस्तार–

दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा महासागर हिंद महासागर विश्व राजनीति का केंद्र बिंदु बना हुआ है। हिंद महासागर का अधिकांश हिस्सा पूरे इस्लाम क्षेत्र से गुजरता है, जिसमें सहारा रेगिस्तान से लेकर इंडोनेशियाई द्वीपसमूह तक शामिल हैं। इसमें सोमालिया, यमन, ईरान और पाकिस्तान भी शामिल हैं। वैसे हिंद महासागर में एक नेता के रूप में काम करने की भारत ने कभी दिलचस्पी नहीं दिखाई। लेकिन अब मौजूदा मोदी सरकार की आक्रामक विदेश नीति ने हिंद महासागर के सामरिक महत्व से जुड़े तमाम देशों तक पहुंचना चाहते हैं। हिंद महासागर में पैठ बनाने के लिए मोदी ने बहुस्तरीय तौर तरीका अपनाया है।[1] ऐसे में उनके लिए केवल पड़ोसी ही नहीं बल्कि अफ्रीकी देश तक अति महत्वपूर्ण हो उठे हैं। इस संदर्भ में मोदी के मैराथन दौरे को देखा जा सकता है। ब्लू इकोनामी के संदर्भ में क्षेत्रीय संगठनों का महत्व बढ़ गया है। प्रधानमंत्री मोदी ने ब्लू इकोनामी के बारे में सार्क के नेताओं से भी बातचीत की। सितंबर 2015 में इंडियन ओसियन रिम एसोसिएशन (आईओआरए) ने पहले मिनिस्ट्रियल ब्लू इकोनामी कांफ्रेंस की मेजबानी की। जिसमें प्राथमिकताओं की पहचान की गई। संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास उद्देश्य लक्ष्य 14 में संरक्षण और समुद्र संबंधी सतत प्रक्रिया को शामिल किया गया है।[2]

मौजूदा भारतीय नौसेना की रणनीति यह है कि हिंद महासागर के पूरे त्रिकोण पर उसके राष्ट्र का अधिकार है और उसके हित की विशिष्ट परिधि में शामिल है। हिंद महासागर परिधि में नेट सिक्योरिटी प्रोवाइडर की भूमिका में आने के बाद भारतीय नौसेना

भारत की विदेश नीति और सुरक्षा नीति का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुकी है। जिसमें वह भारत के समुद्री शक्ति प्रक्षेपण की क्षमता को भी बढ़ावा दे रही है। नौसेना विषेषज्ञ झांग मिंग के अनुसार भारत अंडमान और निकोबार द्वीप समूह का उपयोग मलक्का जलडमरूमध्य में चीनी पहुँच को अवरूद्ध करने के लिए मेटल चीन के रूप में कर सकता है। चीन समय–समय पर यह दावा करता है कि भारत हिन्द महासागर में आयरन कर्टेन का निर्माण कर रहा है। इन सबके नतीजतन आने वाले दशकों में भारत की समुद्री कूटनीति महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली है।

भारत की सुरक्षा, अखण्डता एवं आर्थिक विकास में केन्द्रीय महत्व को रेखांकित करते हुए मार्च, 1958 में आई.एन.एस.मैसूर के अधिकारियों व नाविकों को संबोधित करते हुए पं. जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि "History has shown that whichever power controls the first instance, India's sea-born trade at its mercy and in the second, India's very independence." [3]

भारतीय स्वाधीनता के पश्चात् हिन्दं महासागर में दो शक्ति–ध्रुवों, अमेरिका व सोवियत संघ के मध्य शक्ति स्पर्धा से न केवल क्षेत्रीय भू–राजनीति प्रभावित हुई अपितु 'शांति क्षेत्र' की अवधारणा पर भी गहरा आघात लगा। किन्तु शीत युद्ध की समाप्ति के उपरांत सोवियत अनुपस्थिति से यह क्षेत्र 'नाटोझील' में परिवर्तित हो गया तथा अमेरिका के अतिरिक्त, आस्ट्रेलिया, जापान, दक्षिण कोरिया आदि देशों की नौसैनिक गतिविधियों को भी नवीन अवसर मिला। 11 सितम्बर 2001 की घटना के पश्चात् 'Operation Enduring Freedom' की आड़ में अफगानिस्तान तथा ईराक में अमेरिकी उपस्थिति की पृष्ठभूमि में प्रारम्भ क्षेत्रीय सामुद्रिक सुरक्षा पहल के फलस्वरूप यह सम्पूर्ण क्षेत्र नव–शीतयुद्ध का केन्द्र बन गया है। भारत के रक्षा मंत्रालय की 2005–06 की वार्षिक रिपोर्ट में यह कहा गया है कि बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था पर बढ़ रहे पथ पर विश्व एवं शक्ति के एक ध्रुव के रूप में भारत के अभ्युदय से इस क्षेत्र की सामरिक, आर्थिक संवेदनशीलता बढ़ती जा रही है।[4]

सोवियत विघटन के उपरांत एशिया केन्द्रित चीन–अमेरिकी स्पर्धा से सम्पूर्ण हिन्द महासागरीय क्षेत्र की भू–राजनीति प्रभावित हुई है। आतंकवाद से पीड़ित दक्षिण एशिया इस समय विश्व का सबसे अस्थिर क्षेत्र बन गया है तथा चीन द्वारा एशियाई नेतृत्व हासिल करने की व्याकुलता के परिणामस्वरूप इस क्षेत्र में केन्द्रित होती जा रही शक्ति स्पर्धा ने एक नवीन शीतयुद्ध को तो जन्म दिया ही है, साथ ही हिन्द महासागरीय क्षेत्र के देशों में बढ़ रहे आतंकवाद ने इस महासागर को 'जेहादी आतंकवाद की झील' में परिवर्तित कर दिया है। हार्मुज क्षेत्र तथा दक्षिण पूर्वी एशिया में फ्री एसेमूवमेंट, और इस्लामिक लिबरेशन फ्रण्ट एवं अबू सयाफ जैसे सामुद्रिक आतंकवादी संगठनों के उदय तथा जमाह इस्लामिया का अलकायदा जैसे आतंकी संगठनों से उनकी संलग्नता ने भारतीय सुरक्षा के लिए चुनौती उत्पन्न कर दी है। इस क्षेत्र में बढ़ रही सामुद्रिक डकैती कम चिंताजनक नहीं है। 26/11 के मुंबई हमलावरों का अरब सागर के मार्ग का इस्तेमाल करना भारत की सामुद्रिक चिंताओं की पुष्टि करता है। इतना ही नहीं, पाकिस्तान, ईरान, अफगानिस्तान, म्यांमार, थाईलैण्ड व लाओस जैसे राष्ट्रों में सक्रिय अराजक तत्वों द्वारा इस महासागर के माध्यम से किया जा रहा नशीले पदार्थों का व्यापार एवं इससे प्राप्त धन का आतंकवादियों द्वारा किया जा रहा इस्तेमाल भारत के लिए सर्वाधिक चिंता का विषय है।

उल्लेखनीय है कि 21वीं शताब्दी में एक शक्ति संतुलन–केन्द्र के रूप में उभर रहे भारत के चहुंमुखी विकास व राष्ट्रीय शक्ति के निर्माण में ऊर्जा आवश्यकताओं की निरंतर बढ़ रहीं उपादेयता ने हिन्द महासागर के भू–राजनैतिक व रणनीतिक महत्व में अभिवृद्धि कर दी है। यही कारण है कि जहां एक ओर फारस व अदन की खाड़ी से पूर्वी एशिया तक विस्तृत सामुद्रिक मार्ग के गुरूत्व केन्द्र में भारतीय स्थिति, अंडमान–निकोबार द्वीप क्षेत्र तथा मलक्का जलडमरूमध्य मार्ग की सामरिक महत्ता भारत को प्रभावी नौसैन्य शक्ति बनने हेतु विवश कर रही है, वहीं वैश्विक शक्ति संरचना में आर्थिक विकास हेतु हिन्द महासागर पर निर्भरता उसकी सुरक्षा जिम्मेदाररियों का अहसास भी कराती है। नवम्बर 2003 में भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने सैन्य कमांडरों के एक संयुक्त सम्मेलन में कहा था कि ''आज भारत के स्त्रातेजिक सीमांत दक्षिण एशिया तक विस्तृत हो गए है। हमारे सुरक्षा क्षेत्र मलक्का जलडमरूमध्य व फारस की खाड़ी क्षेत्र से बढ़कर केन्द्रीय एशिया अफगानिस्तान चीन व दक्षिण पूर्वी एशिया तक विस्तृत हो गए है। हमारी स्त्रातेजिक विचारधाराओं का क्षितिज भी विस्तृत होना चाहिए। वाजपेयी का उक्त कथन भारत की सामुद्रिक चिंताओं व चिंतन को इंगित करता है।''[5]

स्पष्ट है कि 21वीं शताब्दी के परिवर्तित हो रहे भू–रणनीतिक व राजनैतिक आयाम पूर्व की तुलना में अत्यन्त जटिल होते जा रहे है तथा भू–अर्थशास्त्र की बढ़ती उपादेयता ने आर्थिक हितों के संरक्षण व विकास की दृष्टि से भारत की निर्भरता हिन्द महासागर पर केन्द्रित होती जा रही है क्योंकि भारत का लगभग 70 प्रतिशत व्यापार एवं ऊर्जा आयात का भी 70 प्रतिशत हिस्सा हिन्द महासागरीय क्षेत्र पर ही निर्भर है। ऐसा अनुमान है कि निकट भविष्य में भारत विश्व का चौथा सबसे बड़ा ऊर्जा उपभोक्ता के रूप में उभरेगा जिससे इसकी ऊर्जा आवश्यकताओं की लगभग 65 प्रतिशत आपूर्ति हिन्द महासागर पर ही निर्भर होगी। वास्तविकता

तो यह है कि मोजांबिक, मलेशिया, इण्डोनेशिया व कतर से आयातित कोयला, द्रवित प्राकृतिक गैस के आयात के अलावा अपने 2.2 मिलियन वर्ग किमी. विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र की सुरक्षा हेतु भारत को दक्षिण अफ्रीका से कन्या पश्चिम में खाड़ी क्षेत्र तथा पूर्व में मलेशिया, इण्डोनेशिया व सिंगापुर तक विस्तृत क्षेत्र में भारत को अपने सामुद्रिक हितों के सुरक्षार्थ सक्रिय व प्रभावी नीति निर्धारित करनी होगी, जिसके लिए उसे इस क्षेत्र में छितरे द्वीपीय क्षेत्रों में अग्रिम आधारों को विकसित करना अपरिहार्य होगा। यहीं कारण है कि भारत ने जहां एक ओर मेडागास्कर में एक इलैक्ट्रानिक श्रवण चौकी स्थापित की है वहीं सेशेल्स, मॉरीशस व मालद्वीप के साथ नौ सैन्य सहयोग बढ़ाकर उन्हें तटीय सुरक्षा पोत, गश्ती एअर क्राफ्ट, सैनिक व शस्त्र–आपूर्ति कर रहा है।[6]

भौगोलिक अवस्थिति की दृष्टि से अण्डमान व निकोबार द्वीप समूह की स्त्रातेजिक महत्ता को समझते हुए भारत ने इस क्षेत्र की सुरक्षा हेतु गंभीर कदम उठाए है। 572 द्वीपों व 8249 वर्ग किमी. में विस्तृत अण्डमान निकोबार द्वीप समूह के केवल 37 द्वीपों में आबादी पाई जाती है। जिसकी संख्या 356152 है। अंडमान निकोबार 90 समुद्री झील चौड़े जल क्षेत्र द्वारा विभक्त है। यह क्षेत्र म्यांमार के कोको द्वीप से मात्र 35 किमी. दूरी पर है। पूर्वी हिन्द महासागर के तीन प्रमुख सामुद्रिक मार्ग को ध्यान में रखते हुए भारत ने न केवल म्यांमार, थईलैण्ड, मलेशिया, इण्डोनेशिया से अपने सामुद्रिक सीमा मुद्दों को सुलझा लिया है अपितु 'लुक ईस्ट पालिसी' के अंतर्गत वह एशियान देशों के साथ आर्थिक व व्यापारिक संबंधों को प्राथमिकता के आधार पर दृढ़ बनाने हेतु प्रयत्नशील है। 'एशियान' देशों के साथ भारत का 1993–94 में 2.5 मिलियन अमेरिकी डॉलर का व्यापार 2008–09 में बढ़कर 48.89 मिलियन डॉलर होना। भारत की इस क्षेत्र में बढ़ रही अभिरूचि का उदाहरण है। इतना ही नहीं, भारत 'एशियान रीजनल फोरम' का सदस्य होने के साथ–साथ एशियान का संवाद साझेदार भी है। इस क्षेत्र के स्त्रातेजिक महत्व का ही परिणाम है कि जहां एक ओर चीन कोकोद्वीप पर आसूचना केन्द्र स्थापित कर बंगाल की खाड़ी में भारत की नौ सैना गतिविधियों पर निगरानी करने की कोशिश में है वहीं इस क्षेत्र के देशों में अपरंपरागत खतरों की संभावनाओं को भी नया आयाम मिल रहा है। इस क्षेत्र में म्यांमार, थाईलैण्ड, मलेशिया, चीन व ताइवान आदि देशों के मछुआरों द्वारा मत्स्य शिकार हेतु प्रवेश करने की अनाधिकार चेष्ठा से यह ध्वनित होता है कि बाह्य शक्तियां किसी न किसी बहाने यहां अपना–अपना प्रभाव बढ़ाकर भारतीय सुरक्षा को प्रभावित करने की कोशिश कर रही है। इतना ही नहीं इस क्षेत्र में बांग्लादेश सहित अन्य राष्ट्रों के नागरिकों द्वारा किया जा रहा गैरकानूनी प्रवचन एवं अंडमान व निकोबार द्वीप समूह को मादक द्रव्यों व अवैध हथियार की तस्करी हेतु एक स्वण त्रिकोण के रूप में म्यांमार द्वारा प्रयुक्त करने की योजनाऐं भारत के लिए गंभीर चिंता का विषय है।[7]

इस क्षेत्र की रक्षा संवदेना का ही यह परिणाम है कि भारत 1 अक्टूबर 2001 को पृथक अंडमान निकोबार कमांड की स्थापना कर अंडमान निकोबार द्वीप के कमांड–इन–चीफ को इसका उत्तरदायित्व सौंपा है। जिससे महत्वपूर्ण आर्थिक क्षेत्र की सुरक्षा साथ–साथ संभावित खतरों का निष्पादन किया जा सके। यह कमान संयुक्त नौ सैन्य अभ्यासों, नौ सैनिक कूटनीति व पेट्रोलियम जैसे गतिविधियों द्वारा विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र की सुरक्षा का उत्तरदायित्व सम्यक ढंग से निभा रहा है। इस कमान में भारत ने पोर्ट ब्लेयर व डिगलीपुर में क्रमशः 10000 फुट लम्बी हवाई पट्टी व कोस्टल गार्ड स्टेशन स्थापित करने के अतिरिक्त कार निकोबार में एक वायु सेना के आधार एवं कामोर्टा में एक अग्रिम नै सैन्य आधार की भी स्थापना की है। इस क्षेत्र में अत्याधिक सैन्य सुविधाओं के विस्तार के साथ–साथ यह कमान नौ सैन्य कूटनीतिक गतिविधियों में भी सक्रिय है जिससे भारत की लुक इस्ट नीति को प्रविस्तारित करके क्षेत्रीय राष्ट्रों के साथ सामुद्रिक मैत्री–सेतु को सुदृढ़ करके अपने व्यापारिक हितों में सतत् अभिवृद्धि की जा सके। भारत द्वारा संपादित मिलन अभ्यास जैसी गतिविधियां इस संदर्भ में विशेषतः उल्लेखनीय है जिसके अंतर्गत सुनामी त्रासदी के परिप्रेक्ष्य में भारत ने क्षेत्रीय राष्ट्रों को त्वरित मानवीय सहायताएं प्रदान की। इतना ही नहीं, यह कमान क्षेत्रीय राष्ट्रों की नौ सेनाओं के साथ प्रतिवर्ष संयुक्त अभ्यास संचालित करके पारस्परिक विश्वास व अंतर्सहयोग को विकसित करने की कार्यवाहियां भी संपादित कर रहा है। सिंगापुर के साथ संचालित संयुक्त सामुद्रिक सैन्य अभ्यास इस संदर्भ में विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इतना ही नहीं, वियतनाम, फिलीपींस, मलेशिया, जापान, आस्ट्रेलिया एवं संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ द्विपक्षीय व बहुपक्षीय सैन्य अभ्यास के आयोजन के अतिरिक्त श्रीलंका के साथ संयुक्त सामुद्रिक कमाण्डों अभ्यास करके भी अंडमान निकोबार कमान इस क्षेत्र में भारत के सामुद्रिक हितों की पूर्ति संबंधी कूटनीतिक गतिविधियां कर रहा है जिसे चीन ने अपने विरूद्ध भारत द्वारा की जा रही सामुद्रिक घेरेबंदी की संज्ञा की है किन्तु स्पष्टतः यह भारतीय हितों के रक्षार्थ ही की जाने वाली कार्यवाही है।[8]

अवैध घुसपैठ, गैरकानूनी आवजन, मादक द्रव्यों के साथ–साथ अवैध हथियारों से प्रभावित क्षेत्रीय सुरक्षा हेतु भारत सरकार ने तटीय सुरक्षा व गश्त हेतु गंभीर कदम उठाए है जिसमें तटीय बलों की महत्वपूर्ण भूमिका है। 'ज्वालामुखी' व द्वीपरक्षा जैसे महत्वपूर्ण सैन्य अभ्यास इस दृष्टि से विशेषतः उल्लेखनीय है। इस क्षेत्र को बाह्य शक्तियों के हस्तक्षेप से सुरक्षित रखने हेतु भारत ने अत्याधिक रॉडार प्रणाली भी स्थापित की है जिससे गश्त व्यवस्था को सुचारू रूप से संचालित किया जा सके। भारत सरकार बंगाल

की खाड़ी क्षेत्र में स्थित पोर्ट ब्लेयर को बिम्सटेक के संभावित मुख्यालय के रूप में विकसित करने योजना पर भी कार्य कर रही है जिससे इस क्षेत्र में चीन के बढ़ रहे प्रभावों को न्यून किया जा सके।

स्पष्ट है कि चीन द्वारा भारत की सामुद्रिक घेरेबंदी एवं इस क्षेत्र में संभावित चीन अमेरिकी स्पर्धा तथा मध्यपूर्व देशों के अतिरिक्त पाकिस्तान, अफगानिस्तान व ईरान आदि के माध्यम से हिन्द महासागरीय क्षेत्र में चीन की बढ़ रहीं उपस्थिति सामुद्रिक हितों की सुरक्षा हेतु भारत के लिए आसन्न चुनौती हैं। इस परिप्रेक्ष्य में भारत को निम्नांकित बिन्दुओं पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए[9]

- अपने व्यापारिक व विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र की सुरक्षा हेतु भारत को अत्याधुनिक नौ सैन्य बल की आवश्यकता है जो उसके व्यापारिक और सामारिक हितों की सुरक्षा कर सके।
- अपने समस्त पडोसियों के साथ विनियोजन नीति का निर्धारण करते हुए भारत को क्षेत्रीय स्थिरता, शांति व विकास पर संयुक्त दृष्टिकोण विकसित करना चाहिए।
- दक्षिण पूर्वी एशियाई राष्ट्रों के साथ आर्थिक, व्यापारिक, तकनीकी व सामरिक संबंधों के विकास हेतु गतिशील व यथार्थपरक नीति निधारित करनी चाहिए।
- हिन्द महासागर में अपने सामुद्रिक हितों को ध्यान में रखते हुए भारत– अमेरिका सामरिक संबंधों पर भारत को यथार्थपरक नौ सैन्य नीति निर्धारित करनी चाहिए।[10]
- हिन्द महासागर में सामुद्रिक संचार रेखाओं की सुरक्षा हेतु भारत को त्वरित कदम उठाना चाहिए। इस परिप्रेक्ष्य में दक्षिण पूर्वी एशियाई क्षेत्र में आतंकवाद के विरूद्ध अमेरिका के क्षेत्रीय सामुद्रिक सुरक्षा पहल पर भरत को सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए जिससेइस क्षेत्र की सामुद्रिक संचार रेखाओं की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके।
- सामुद्रिक सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु भारत को वैश्विक सुरक्षा व्यवस्थाओं पर सहयोगात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।[11]
- सामुद्रिक–आतंकवाद व डकैती, सामुद्रिक संसाधनों का अनाधिकार दोहन, मादक द्रव्य व्यापार एवं शस्त्र व्यापार पर नियंत्रण हेतु संयुक्त निगरानी को प्रोत्साहन देना चाहिए।
- तटीय सुरक्षा बलों को सुदृढ़ बनाने हेतु तटीय गार्ड को आधुनिकतम व प्रभावी बनाने के साथ–साथ इसकी कार्य क्षमता में वृद्धि हेतु पोर्ट ब्लेयर स्थित कमान के अतिरिक्त गोआ व कोचीन में पृथक रूप तटीय संयुक्त कमान गठित करना चाहिए।
- संयुक्त नौ सैन्य अभ्यासों को प्रोत्साहन देना चाहिए जिससे सामुद्रिक सुरक्षा व्यवस्था सुदृढ़ हो सके।
- भारत को अपने बंदरगाहों व नौ परिवहन की क्षमता एवं सुरक्षा में वृद्धि हेतु अपनी ''सागरमाला'' परियोजना को त्वरित करने के साथ–साथ जल के भीतर निगरानी संयंत्रों को लगाने एवं नौपुलिस बल का गठन करना चाहिए।
- अपने सामुद्रिक क्षेत्रों को सुव्यवस्थित करने हेतु भारत को हवाई निगरानी, तटीय बलों व नौसैना के मध्य यथोचित सामंजस्य विकसित करना चाहिए तथा एअरक्राफ्ट कैरियर की फ्लीट गठित करने व नाभिकीय पनडुब्बियों की व्यवस्था करनी चाहिए। जिससे सम्पूर्ण हिन्द महासागर में अपने हितों की रक्षा सुनिश्चित की जा सके।[12]

रणनीतिक रूप से बेहद महत्वपूर्ण क्षेत्र हिन्द महासागर में भारत की स्थिति मजबूत करने के उद्देश्य से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सेशेल्स, मॉरीशस और श्रीलंका की यात्रा की। हिन्द महासागर में बसे राष्ट्र द्वीप देखने में भले ही छोटे हों परन्तु संसार के मानचित्र में उसकी उपस्थिति सामरिक दृष्टिकोण से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। दुर्लभ खनिजों और तेल का अकूत भंडार अपने गर्भ में छिपाए बैठा हिन्द महासागर व्यापारिक यातायात का अत्यन्त महत्वपूर्ण माध्यम है। इसलिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि इस सामुद्रिक मार्ग से जलयानों का आवागमन सुरक्षित और बिना रोक–टोक के हो। हिन्द महासागर में इस अत्यन्त संवेदनशील सामरिक महत्व वाले देश को ध्यान में रखकर प्रधानमंत्री मोदी ने सेशेल्स की यात्रा की। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और सेशेल्स के राष्ट्रपति जेम्स एलिक्स माइकल की मौजूदगी में चार समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए। प्रधानमंत्री मोदी ने सेशेल्स को विश्वसनीय मित्र और रणनीतिक भागीदार बताया। वहीं सेशेल्स ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता का समर्थन किया है।[13]

निष्कर्षः–

जिस तरह चीन और भारत ने भारत–प्रशांत महासागर में विभिन्न देशों से संपर्क किया है, ये दर्शाता है कि दोनों देशों का इस क्षेत्र में एक दूसरे के नीति निर्धारण पर प्रभाव पड़ता है। यहां तक कि अगर हम कहते है कि चीन भारत के साथ प्रतिद्वंद्विता में नहीं है, क्योंकि वह अर्थव्यवस्था और शक्ति के मामले में पहले ही प्रभावी है, फिर भी इसे इस रूप में देखा जाना चाहिए कि चीन भारत को

क्षेत्रीय प्रभाव मण्डल से हटाना चाहता है। भारत–प्रशांत में चीन के आने के बाद भार ने अपने दृष्टिकोण में बदलाव किया है। जिस तरह से भारत और चीन ने हिन्द महासागर, और व्यापक रूप से भरत–प्रशान्त क्षेत्र में एक के बाद एक कदम उठाये है, उससे साबित होता है कि दोनों देश एक दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा में है। भारत के लिए यह क्षेत्र ऐतिहासिक मौजूदगी वाला क्षेत्र है। अगर पूरे प्रशांत क्षेत्र में नहीं, तो भी इसके पश्चिमी भाग में तो है ही। वर्तमान अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य में भारत के पास अवसर है कि वह दोनों दिशाओं में कदम उठाये। यानी आंतरिक संतुलन के मामले में भी और बाहरी संतुलन के रूप में भी। चीनी प्रबलता की दृष्टि से शक्ति के दोनों रूपों में, चाहे वह कठोर रूप हो या नरम, भारत को क्षेत्र और क्षेत्र से बाहर की ऐसी अन्य शक्तियों से सहायता लेनी होगी, जिनके इस भारत–प्रशांत क्षेत्र में चीनी हस्तक्षेप को रोकने में हित सधते है जैसे अमेरिका।

संदर्भ सूची–

1- झिनरू एल, ''सिल्कस एण्ड रिलिजिअस इन यूरेशिया, ए. डी. 600–1200'', चाइनीज अकेडेमी ऑफ सोसिअल सांइसेज,'' द अन्नेबर्ग फाउनडेशन, पृ. 215
2- गार्बर, जे. डब्ल्यू., ''प्रोटेक्टेड कन्टेस्ट; साइनो इण्डियन कॉन्फिलिक्टस इन द ट्वन्थीज सेन्चुरी'', ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, पृ. 212
3- झिऑग, क्यू., ''द एक्सपीरिएन्स ऑफ इण्डियन सॉफ्टवेयर एण्ड इनकॉरमेशन टैक्नोलॉजी,'' इनएबलड सर्विस एजेन्सी, पृ. 201
4- क्लूनबर्ग एस. और चक्रवती ए., ''ट्रांजिसन एण्ड डेवलपमेंट इन इण्डिया,'' रूटलेज, न्यूयॉर्क, पृ. 199
5- करोनस्टडट के अलन, ''पाकिस्तान –यू.एस. रिलेशन्स,'' सी आर एस रिपोर्ट फॉर कांग्रेस, कांग्रेसिनल रिसर्च सर्विस, पृ. 185
6- इरा. एम. एण्ड हामी बी., ''सिस्टमेटिक पॉलिटिकल ज्योग्राफी'', जॉन विले एण्ड सन्स, नई दिल्ली, पृ. 190
7- जैन वी. एम., 'द चाइनो–इण्डिया प्रोजेक्ट'', सेन्टर ऑफ एशियन स्टडीज, द यूनिवर्सिटी ऑफ हांग–कांग, पृ. 80
8- अमरावती मल्लपा, ''चाइना, इंडिया एण्ड जापान, दॉ रिव्यू ऑफ देकर रिलेशन्स, ए. बी. डी. पब्लिशर्स, जयपुर, पृ. 24
9- अस्थाना वन्दना, ''इंडियाज फॉरेन पॉलिसी एण्ड सबकॉन्टीनेंटल पॉलिसीज, कनिक्षा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पृ. 07
10- पंत पुष्पेश, '21वीं सदी में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध'' मैग्रा प्रकाशन, नई दिल्ली पृ. 99
11- पांडा. स्नेहलता, अभयमुख भारत–चीन संबंधः विष्वास की कमी की मिसाल,'' वर्ल्ड फोकस, पृ. 29
12- भारद्वाज. एस.एम, ''भारत–चीन सम्बन्ध – एक अवलोकन'' न्यू प्रभात प्रकाषन, मेरठ पृ. 38
13- अभिनंदन. नेताजी, ''चीन के साथ भारत के संबंधः बाधाएँ एवं चुनौतियाँ,'' वर्ल्ड फोकस, पृ. 79